bihar board 8th class sanskrit note | संघे शक्तिः

पाठ 2 – संघे शक्तिः (एकता में ही शक्ति है)

संघे शक्तिः (एकता में ही शक्ति है)

(कृदन्त प्रयोग)

[आधुनिक युग की सबसे..... पर प्रकाश डाला गया है । अस्ति गंगायाः रमणीये तीरे ....चिन्तितस्तिष्ठति ।

अर्थ –गंगा के रमणीय तीर पर पुष्कल नामक गाँव है । वहाँ बहुत घन सम्पन्न हरिहर नामक किसान था । उसने खेती से खूब सम्पत्ति अर्जित की । गाँव और उसके चारों ओर के गाँवों में उसकी खूब प्रतिष्ठा थी । उसके चार पुत्र हुए । वे सब पिता के काम में सहायता नहीं करते थे । बल्कि चारों परस्पर झगड़ते रहते थे । एक कहता था – तुझे ही पिता अधिक मानते हैं । तुम ही उनके विपुल घन (सब धन) को प्राप्त करोगे । दूसरा कहता था – तुम बहुत आलसी हो ।
कभी कुछ भी हितकर उपयोगी कार्य नहीं करते हो । तीसरा उसी प्रकार विद्याध्ययन की निन्दा करता था । चौथा पढ़ाई के लिए पिता से पैसा माँगता था तो तीसरा पिता को मना करता था । इस प्रकार किसी भी कारण को लेकर चारों भाईयों में झगड़ा होता रहता था । इससे बुद्धिमान पिता सदैव चिन्तित रहा करता था ।

वृद्धः पिता स्वपुत्रान् .....तथैव आदिष्टः ।

अर्थ – बूढ़ा बाप अपने पुत्रों को खेती के लिए बार – बार प्रेरित करता था । किन्तु सभी आलसी नहीं सुनते (समझते) थे । एक बार वह बुढ़ापा रोग से ग्रस्त होकर बिछावन पकड़ लिया । वह झगड़ते हुए पुत्रों में एकता का महत्व समझाने का उपाय सोचा । सभी पुत्रों को बुलाकर चार दण्डा जो एक जगह कसकर बँधा था उठाकर एक पुत्र को देकर बोला — तुम इसको तोड़ दो । वह किसी भी प्रकार से तोड़ नहीं सका । इसके बाद दूसरे पुत्र को उसी प्रकार आदेश दिया ।

सोऽपि तद् दण्ड चतुष्टयं..... पुंसाम् ।

अर्थ – वह भी बंधे चारों दण्डा को तोड़ नहीं सका । यही दशा अन्य दो पुत्रों की भी हुई । इसके बाद बूढा बाप ने चारों दण्डों को खोलकर एक – एक दण्डा एक – एक पुत्रों को दिया । उसके बाद उस दण्डे को फिर से तोड़ने का आदेश दिया । सभी पुत्र अपने – अपने हाथ का दण्डा को तोड़ने में सफल हो गये । तब पिता ने कहा – पुत्रो ! ऐसा ही तुमलोग समझो । यदि तुम सब अलग – अलग रहोगे तो कोई भी शत्रु तुम सबको एक – एक को विनाश कर सकता है । फिर यदि तुम लोग सभी मिलकर एकता में बंधे रहोगे तो कोई भी बाहरी लोग तुम सबों का विनाश करने में समर्थ नहीं हो सकता है । यही उपदेश है कि मनुष्य के लिए सबसे अच्छी एकता है ।

तस्माद् दिवसात् .....कृतवन्तः ।

अर्थ -उसी दिन से सभी चारों पुत्र अपने – अपने बुरे विचारों को त्याग कर परस्पर मेल से घर में रहने लगे और पिता को सेवा करके उसे नीरोग कर दिया ।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ –

रमणीये = सुन्दर (सप्तमी विभक्ति) । ग्रामः = गाँव । तत्र = वहाँ । बहुधनसम्पन्न : = बहुत सम्पत्ति से युक्त , धनी । कृषिकः = किसान । प्रभूता = बहुत , पर्याप्त । सम्पत्तिः = धन । अर्जिता = कमायी गयी । परिसरे = प्रांगण में / आस – पास । महती = बहुत , बड़ी । सम्प्राप्ता = प्राप्त हुई । चत्वारः = चार । अभवन् = हुए । अकुर्वन् = किये । प्रत्युत= अपितु , बल्कि । परस्परम् = आपस में । कलहायन्ते = लड़ते हैं । अपरम् = दूसरे को । कथयति = कहता है । त्वाम् = तुम्हें । एव = ही । मन्यते = मानता है । विपुलाम् = बहुत । प्राप्स्यसि = पाओगे । अतीव = बहुत । अलसः = आलसी । किमपि = कुछ भी । हितकरम् = भला । करोषि = करते हो । तथैव = वैसे ही । धनायाचनाम् = धन की मांग । तदा = तब । पितरम् = पिता को । वारयति = रोकता है , मना करता है । एवम् = इस प्रकार । समाश्रित्य = आश्रय लेकर । कलहः = लड़ाई । प्रवर्तते स्म = होती थी । सततम् = लगातार । तिष्ठति = रहता है । कृषिकर्मणः = खेती के काम के । संचालनाय = करने के लिए । भूयो भूयः = बार – बार । प्रेरयति = प्रेरित करता है । शृण्वन्ति = सुनते हैं । एकदा = एक बार । वार्धक्यजनितेन = बुढ़ापे से उत्पन्न । शय्यासीन : = बिछावन पर लेटा हुआ । जातः = हुआ । संघबद्धतायाः = मिलकर रहने के । बोधनाय = समझने के लिए । अचिन्तयत् = सोचा , विचार किया । आहूय = बुलाकर । सुबद्धम् = अच्छी तरह बंधा हुआ । दण्डचतुष्टयम् = चार दण्डों को (दण्डम् = डण्डा) । दत्वा = देकर । प्राह = कहा । एनम् = इसको , इसे । भञ्जय = तोड़ो । भक्तुम् = तोड़ने के लिए / में । नाशक्नोत् = (न + अशक्नोत्) समर्थ नहीं हुआ । तदा = तब । आदिष्टः = आदेश दिया । निर्बध्य = बन्धनरहित करके , खोलकर । एकैकम् = एक – एक को । दत्तवान् = दिया । बोटयितुम् = तोड़ने के लिए । किञ्च = तदनन्तर । पुनः = फिर । आदिष्टवान् = आदेश दिया । हस्तस्थम् = हाथ में स्थित , हाथ में रहने वाले । बुध्यध्वम् = तुमलोग समझो । तिष्ठथ = रहते हो । कश्चित् = कोई । एकैकान् = एक – एक को । विनाशयिष्यति = नष्ट कर देगा । मिलित्वा = मिलकर । बाह्यजनः = बाहरी मनुष्य । विनाशयितुम् = नष्ट करने के लिए / में । संहतिः = एकता । श्रेयसी = अधिक अच्छी । पुंसाम् = मनुष्यों का / की / के । प्रभृति = से लेकर इत्यादि । सर्वे = सभी । त्यक्त्वा = छोड़कर । परस्परम् = आपस में । मेलनेन = मेल – मिलाप से । अवर्तन्त = थे , रहते थे । अरोगम् = रोगरहित । कृतवन्तः = किये ।

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः करोत।

सम्पत्तिरर्जिता ,त्वामेव, त्वमेव, किमपि, कदापि ,तथैव, विद्याध्ययनस्य ,एवमेव ,चिन्तितस्तिष्ठति, सर्वेऽपि ,कथमपि ,सोऽपि, इयमेव ,अपरयोरपि ,पुत्रयोरभवत् ,एकैकम् ,किञ्च ,कश्चित् ,कोऽपि ,अयमुपदेशः , गृहेऽवर्तन्त , पितुश्च ।

उत्तर- सम्पत्तिः + अर्जिता (विसर्ग – सन्धिः)
त्वाम् + एव
त्वम् + एव
किम् + अपि
कदा + अपि (दीर्घ – सन्धि
तथा + एव (वृद्धि सन्धिः)
विद्या + अध्ययनस्य (दीर्घ – सन्धिः)
एवम् + एव
चिन्तितः + तिष्ठति (विसर्ग – सन्धि
सर्वे + अपि (पूर्वरूप एकादेश)

https://www.evidyarthi.in/

कथम् + अपि
सः + अपि (विसर्ग – सन्धि)
इयम् + एव
अपरयोः + अपि (विसर्ग – सन्धिः)
पुत्रयोः + अभवत् (विसर्ग – सन्धिः)
एक + एकम् (वृद्धि – सन्धिः)
किम् + च (व्यञ्जन – सन्धिः)
कः + चित् (विसर्ग – सन्धिः)
क : + अपि (विसर्ग – सन्धिः)
अयम् + उपदेशः
गृहे + अवर्तन्त (पूर्वरूप – सन्धिः)
पितुः + च (विसर्ग – सन्धि)

प्रकृति – प्रत्यय – विभागः –

(i)अर्जिता =√अर्ज + क्त , स्त्रीलिङ्ग , एकवचन
(ii)सम्प्राप्ता =सम् + प्र +√आप् + क्त , स्त्री ० एकवचन
(iii) कलहायन्ते= कलह + क्याङ्, प्रथम पुरुष , बहुवचन
(iv)अकुर्वन्=√कृ लङ्लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
(V)मन्यते=√मन् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन (vi)प्राप्स्यसि=प्र √आप् लृट् लकार , मध्यम पुरुष , एकवचन
(vii)जातः=√जन् + क्त
(viii)समाश्रित्य= सम् + आ + √श्रि + ल्यप्
(ix) प्रवर्तते = प्र + वृत् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
(x)तिष्ठति =√ स्था, लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
(xi)प्रेरयति=प्र + √ईर् + णिच् , लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
(xii)आहूय= आ +√ह् वे + ल्यप्
(xiii)दत्त्वा=√ दा + क्त्वा
(xiv)आदिष्टः =आ + दिश् + क्त
(xv)भङ्क्षय=√भंज् लोट् लकार , मध्यम पुरुष , एकवचन
(xvi)अशक्नोत्= √शक् लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन ll

https://www.evidyarthi.in/